B.A. I Part (2) 17/8/21
Hindi V.S.
B.A. + B.Sc.

डॉ० आरती कुमारी

आगे की पंक्तियों में कवि माँ गंगा से क्षमा याचना माँगते हुए कहते है कि हे माँ गंगे अनजाने में मुझसे एक अपराध हो गया है उसे आप क्षमा कर दिजियेगा। अपराध यह है कि आपके जल का पहला स्पर्श मैंने अपने पैर से किया जो सही नहीं है। मेरा यह आचरण भारतीय संस्कृति के विरुद्ध है। आपके जल का स्पर्श सबसे पहले मुझे अपने हाथ से करना चाहिए था।

गंगा की महिमा का वर्णन करते हुए कवि कहते हैं कि मैं जप, तप, योग और ध्यान धारणा नहीं कर सकता क्योंकि जप, तप, योग और ध्यान धारणा करने से जितना पुण्य की प्राप्ति होती है उतने पुण्य की प्राप्ति मात्र एक बार गंगा में स्नान करने से होती है। मेरा मन जब गंगा में एक बार स्नान करने से ही संतुष्ट हो जाता है तो मैं इतने कठिन कार्य जप, तप, योग और ध्यान में नहीं कर सकता।

अन्त में विद्यापति कहते है कि हे माते गंगा मैं आपसे निवेदन करता हूँ कि अन्तिम अवस्था में आप मुझे अपने से दूर करने का कष्ट न करें। मैं आपका भक्त हूँ और आप मेरे भगवान हैं। मैं चाहता हूँ कि जीवन की अन्तिम अवस्था में भी मेरी और आपकी निकटता बनी रही। अन्तिम समय में भी आपका आशीर्वाद मुझे मिले, आपकी भक्ति मुझे प्राप्त हो।

क्रमशः -